## सैम्युएलसन के सिद्धान्त की मान्यताएं

लोक व्यय के सम्बन्ध में सैम्युएलसन के शुद्ध सिद्धान्त को समझने के लिए जरूरी है कि हम इ मान्यताओं को समझ लें :

(1) ध्यान देने योग्य पहली बात यह है कि उन्होंने ध्रुवीय स्थितियों (polar cases) को लिया है। उपभोग वस्तु, जैसे—रोटी, उस प्रकार की वस्तु है जिसकी कुल मात्रा का विभाजन दो या अधिक उपभो में सम्भव है। मान लें कि किसी निजी वस्तु की कुल उत्पत्ति X है जिसका विभाजन दो उपभोक्ताओं A B में इस प्रकार होता है कि A इसका उपभोग $X_A$ मात्रा में तथा B का उपभोग $X_B$ मात्रा में होता है $X_A + X_B = X$; सार्वजनिक (लोक) उपभोग वस्तु के सम्बन्ध में सैम्युएलसन की मान्यता यह है कि ऐसी वस्तु है जिसकी कुल उत्पत्ति का उपभोग सभी उपभोक्ता समान मात्रा में करते हैं। मान लें कि वस्तु का कुल उत्पादन G है तथा A एवं B के द्वारा इसका उपभोग $G_A$ तथा $G_B$ मात्रा में इस प्रकार है कि $G_A = G_B = G$. स्पष्ट है कि निजी वस्तु की तरह सार्वजनिक वस्तु की कुल उत्पत्ति को व्यक्ति उपभोक्ताओं के व्यक्तिगत उपभोग को जोड़कर प्राप्त नहीं किया जा सकता।

(2) दूसरी मान्यता यह है कि निजी वस्तुओं की मांग के सम्बन्ध में उपभोक्ताओं के अधिमान जानकारी बाजार द्वारा प्राप्त की जाती है जहां वे अपने अधिमान को व्यक्त करते हैं। सार्वजनिक वस्तुओं अधिमान इस प्रकार व्यक्त नहीं किया जाता क्योंकि ऐसी वस्तु के प्रत्येक उपभोक्ता के हित में यह होगा वह गलत संकेत दे तथा बहाना करे कि उसे इस वस्तु की आवश्यकता नहीं है। इस समस्या के समाधान लिए सैम्युएलसन ने मान लिया कि एक सर्वज्ञ मशीन (Omniscient Calculation Machine) है जि सार्वजनिक वस्तु की व्यक्तिगत मांग (Individual demand) की जानकारी है।

## आंशिक साम्य विश्लेषण

इन दो मान्यताओं के आधार पर अब यह देखा जाय कि किस प्रकार निजी एवं सार्वजनिक वस्तु अधिकतम उत्पत्ति प्राप्त होती है तथा ऐसे कार्यकुशल उत्पादन (Efficient Production) की शर्तें क्या इस विवेचना के लिए चित्र 6.3 को देखा जाय।

चित्र 6.3 में आय के दिये हुए वितरण तथा अन्य वस्तुओं की दी हुई कीमत के आधार पर दो व्यक्ति A तथा B के लिए निजी एवं लोक वस्तु की मांग को प्रस्तुत किया गया है। बायीं ओर के चित्र में $D_A$ तथा $D_B$ दोनों व्यक्तियों की निजी वस्तु की मांग रेखा है तथा $D_{A+B}$ निजी वस्तु की बाजार मांग रेखा है जिसे व्यक्तियों की मांग रेखाओं के क्षैतिज योग (Horizontal addition) से प्राप्त किया गया है। इसी चित्र X की पूर्ति रेखा को SS द्वारा दिखाया गया है। बाजार मांग वक्र $D_{A+B}$ तथा पूर्ति वक्र SS का E बिन्दु पर कटान होता है। इससे यह जानकारी मिलती है कि X की OH मात्रा का उत्पादन होता है तथा इसे OC कीमत पर बेचा जाता है। यह OC ऐसी कीमत है जिस पर दोनों ही उपभोक्ता A तथा B वस्तु X

Scanned with CamScanner

खरीदते हैं। चित्र से यह जानकारी भी मिलती है कि OH का क्रय A तथा B के द्वारा इस प्रकार होता है कि A इसकी OF मात्रा तथा B इसकी OG मात्रा खरीदता है ताकि OF + OG = OH.

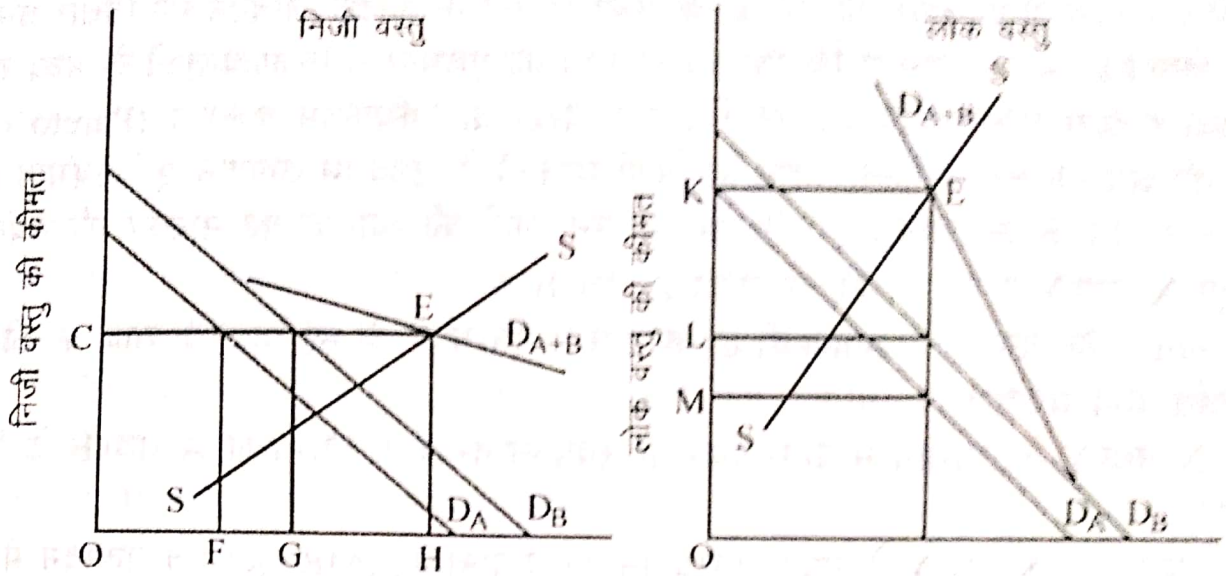


चित्र 6.3

चित्र 6.3 की दायीं ओर $D_A$ एवं $D_B$ लोक वस्तु G की मांग रेखा क्रमशः A तथा B के लिए है। $D_A$ तथा $D_B$ के ऊर्ध्व योग (Vertical addition) द्वारा लोक वस्तु G का बाजार मांग वक्र $D_{A+B}$ प्राप्त होता है। इसका पूर्ति वक्र SS है। SS तथा $D_{A+B}$ के E बिन्दु पर कटान द्वारा यह मालूम हो जाता है कि इस वस्तु की कुल उत्पत्ति ON है जिसका उपभोग A द्वारा ON रहता है तथा B द्वारा भी ON है। इस प्रकार A का उपभोग $G_A$ = B द्वारा उपभोग $G_B$ = कुल उपभोग G। यद्यपि उपभोग समान मात्रा में होता है, फिर भी A तथा B इस वस्तु के लिए समान कीमत नहीं देते हैं। इसका कारण यह है कि दोनों ही उपभोक्ताओं के लिए लोक वस्तु का मूल्यांकन अलग-अलग है। A इसके लिए कर के रूप में OM कीमत देने को तत्पर है जबकि B अधिक कीमत OK देने को प्रस्तुत है। इसका कारण यह है कि B के अधिमान में इस लोक वस्तु का महत्व A की तुलना में अधिक है।

Scanned with CamScanner